आकाश को दर्पण के रूप में देखने की अवधारणा

ज्योतिष हमें यह समझने के लिए प्रेरित करता है कि अस्तित्व एक रहस्य है, परंतु यह रहस्य निरर्थक नहीं है. यह एक ऐसा रहस्य है, जिसमें व्यवस्था, अर्थ और अनुभव की संभावनाएँ निहित हैं. जब हम इस रहस्य को स्वीकार करते हैं और उसके साथ एक संवाद स्थापित करते हैं, तो हम अपने जीवन को एक गहरे और व्यापक संदर्भ में समझने लगते हैं. इस प्रकार ज्योतिष केवल एक ज्ञान प्रणाली नहीं, बल्कि जीवन को समझने और जीने की एक कला बन जाता है, जो हमें ब्रह्मांड के साथ एक गहरे और सार्थक संबंध की ओर ले जाती है.

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

मानव चेतना के इतिहास में आकाश केवल एक दृश्य विस्तार नहीं रहा, बल्कि वह एक अनुभव, एक रहस्य और एक सतत संवाद का क्षेत्र रहा है. जब आदिम मानव ने पहली बार तारों से भरे आकाश को देखा होगा, तब उसके भीतर केवल जिज्ञासा ही नहीं, बल्कि एक गहन विस्मय भी उत्पन्न हुआ होगा. यही विस्मय धीरे-धीरे ज्ञान, दर्शन और ज्योतिष के रूप में विकसित हुआ. ब्रह्मांड के संदर्भ में सबसे गहन और अनुत्तरित प्रश्न यह है कि 'यह क्यों है?' - और इसी प्रश्न के साथ एक और अधिक अद्भुत तथ्य जुड़ा है कि 'यह है'. यह अस्तित्व स्वयं में एक रहस्य है, जिसे पूर्णतः समझना संभव नहीं, परंतु अनुभव करना संभव है. ज्योतिष इसी अनुभव का माध्यम बनता है, जो मनुष्य को ब्रह्मांड के साथ जोड़ता है और उसे यह समझने में सहायता करता है कि उसका जीवन इस व्यापक व्यवस्था का एक अंग है.

आकाश को दर्पण के रूप में देखने की अवधारणा केवल एक काव्यात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक गहन दार्शनिक सत्य है. 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' का सिद्धांत यह बताता है कि मनुष्य और ब्रह्मांड के बीच एक अदृश्य लेकिन सशक्त संबंध है. यह संबंध कारण-कार्य के रूप में नहीं, बल्कि प्रतिध्वनि के रूप में कार्य करता है. जब ग्रहों की गति बदलती है, तो वह केवल आकाशीय परिवर्तन नहीं होता, बल्कि वह मानव जीवन के अनुभवों के साथ एक प्रतीकात्मक तालमेल स्थापित करता है. इस प्रकार आकाश एक ऐसा दर्पण बन जाता है, जिसमें मनुष्य अपने जीवन की गहराइयों को देख सकता है. यह दर्पण स्थिर नहीं, बल्कि परिवर्तनशील है, और इसी परिवर्तनशीलता में जीवन का वास्तविक स्वरूप निहित है. यहाँ चन्द्रमा का स्थान विशेष महत्व रखता है. चन्द्रमा केवल एक खगोलीय पिंड नहीं, बल्कि समय का जीवंत प्रतीक है. उसकी कलाएँ समय को एक चक्रीय रूप में प्रस्तुत करती हैं—एक ऐसा चक्र जो निरंतर चलता रहता है और जीवन के विभिन्न चरणों को दर्शाता है.

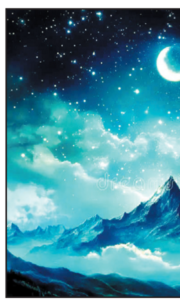

अमावस्या से पूर्णिमा तक का सफर केवल प्रकाश का विस्तार नहीं, बल्कि चेतना का भी विस्तार है. भारतीय ज्योतिष में चन्द्रमा को 'मन' का कारक माना गया है, जो इस तथ्य को दर्शाता है कि समय और मन के बीच एक गहरा संबंध है. जब चन्द्रमा बढ़ता है, तो मन में ऊर्जा और उत्साह बढ़ता है, और जब वह घटता है, तो आत्मचिंतन और विश्राम की प्रवृत्ति बढ़ती है. इस प्रकार चन्द्रमा हमें यह सिखाता है कि समय केवल बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक भी होता है.

चन्द्रमा का यह चक्रीय स्वरूप हमें जीवन के एक महत्वपूर्ण सत्य से परिचित कराता है—परिवर्तन. जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं है, और हर अवस्था अस्थायी है. यह समझ हमें जीवन के उतार-चढ़ाव को स्वीकार करने की शक्ति देती है. आधुनिक समाज में समय को केवल घड़ी और कैलेंडर के माध्यम से मापा जाता है, जिससे वह एक यांत्रिक प्रक्रिया बन जाता है. परंतु चन्द्रमा हमें यह सिखाता है कि समय एक अनुभव है, जिसे हम महसूस करते हैं. यह अनुभव हमें जीवन के साथ एक गहरे स्तर पर जोड़ता है और हमें यह समझने में सहायता करता है कि कब आगे बढ़ना है और कब ठहरना है.

ब्रह्मांडीय सहभागिता का विचार इस पूरे विमर्श को एक और गहराई प्रदान करता है. मनुष्य ब्रह्मांड का केवल एक दर्शक नहीं, बल्कि उसका एक सक्रिय सहभागी है. यह सहभागिता जन्म के क्षण से ही आरंभ हो जाती है, जब व्यक्ति की जन्मकुंडली उस समय के आकाशीय विन्यास को दर्शाती है. यह कुंडली भाग्य का निर्धारण नहीं करती, बल्कि संभावनाओं का एक मानचित्र प्रस्तुत करती है. यह मानचित्र हमें यह समझने में सहायता करता है कि हमारे जीवन में कौन-कौन से मार्ग उपलब्ध हैं, और हम अपनी चेतना और कर्म के माध्यम से किस दिशा में आगे बढ़ सकते हैं. इस प्रकार ज्योतिष नियतिवाद का समर्थन नहीं करता, बल्कि यह स्वतंत्रता और जिम्मेदारी का संतुलन प्रस्तुत करता है.

यह सहभागिता केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी कार्य करती है. जब हम इतिहास को देखते हैं, तो हमें यह स्पष्ट दिखाई देता है कि विशेष ग्रह योगों के समय महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन हुए हैं. यह संयोग मात्र नहीं, बल्कि एक गहरे ब्रह्मांडीय संबंध का संकेत है. इस प्रकार ज्योतिष हमें यह सिखाता है कि हम एक बड़े तंत्र का हिस्सा हैं, और हमारे कार्य उस तंत्र को प्रभावित करते हैं. यह समझ हमें अधिक जिम्मेदार और जागरूक बनाती है.

अब यदि हम ब्रह्मांड के अस्तित्व के प्रश्न पर विचार करें, तो यह स्पष्ट होता है कि यह एक ऐसा रहस्य है, जिसे पूरी तरह समझना संभव नहीं है. यह रहस्य ही हमें खोज की ओर प्रेरित करता है. विज्ञान इस रहस्य को भौतिक नियमों के माध्यम से समझने का प्रयास करता है, जबकि ज्योतिष इसे प्रतीकों और अनुभवों के माध्यम से समझता है. दोनों ही दृष्टिकोण महत्वपूर्ण हैं, और दोनों मिलकर हमें एक समग्र समझ प्रदान करते हैं. ज्योतिष इस रहस्य को एक भाषा देता है, जिसके माध्यम से हम ब्रह्मांड के साथ संवाद कर सकते हैं.

अराजकता से व्यवस्था की ओर ब्रह्मांड का विकास इस रहस्य का एक महत्वपूर्ण पहलू है. प्रारंभिक अवस्था में ब्रह्मांड अत्यंत अराजक था, परंतु समय के साथ उसमें एक सुव्यवस्थित संरचना विकसित हुई. यह परिवर्तन इस बात का संकेत है कि व्यवस्था अराजकता के भीतर ही निहित होती है. ज्योतिष इस व्यवस्था को समझने का एक प्रतीकात्मक माध्यम है, जो हमें यह सिखाता है कि जीवन की अनिश्चितताएँ भी एक व्यापक व्यवस्था का हिस्सा हो सकती हैं. जब हम इस दृष्टिकोण को अपनाते हैं, तो हम जीवन की चुनौतियों को अधिक संतुलन और धैर्य के साथ स्वीकार कर सकते हैं.

'समय के आरंभ में रात्रि का अस्तित्व नहीं था'—यह विचार हमें ब्रह्मांड की प्रारंभिक अवस्था की ओर ले जाता है, जहाँ सब कुछ प्रकाश से भरा हुआ था. अंधकार का उद्भव बाद में हुआ, जब पदार्थ और ऊर्जा ने विभिन्न रूप ग्रहण किए. यह प्रकाश और अंधकार का द्वैत ही समय की अनुभूति को संभव बनाता है. यदि केवल प्रकाश ही होता, तो परिवर्तन का अनुभव नहीं होता, और यदि केवल अंधकार होता, तो भी कोई भेद नहीं होता. इस प्रकार दिन और रात्रि का क्रम जीवन की लय को स्थापित करता है.

नारद प्राकटोत्सव
सुख-समृद्धि और भक्ति का उत्सव

हिंदू धर्म में नारद जयंती का पर्व विशेष श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाता है. वर्ष 2026 में यह पर्व ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया तिथि को पड़ रहा है, जो पंचांग के अनुसार रात 12 बजकर 51 मिनट से शुरू होकर 3 मई की रात 3 बजकर 2 मिनट तक रहेगा.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, नारद जी निरंतर 'नारायण-नारायण' का जाप करते रहते हैं और भक्तों की प्रार्थनाओं को भगवान तक पहुंचाते हैं. इस दिन उनकी पूजा और भगवान विष्णु की आराधना करने से जीवन में सुख, शांति और समृद्धि आती है. साथ ही यह दिन ज्ञान, बुद्धि और सकारात्मक ऊर्जा बढ़ाने का प्रतीक भी माना जाता है. नारद जयंती केवल पूजा का पर्व नहीं है, बल्कि यह भक्ति, सेवा और दान-पुण्य का संदेश भी देती है. दान करना इस दिन विशेष शुभ माना गया है. ब्राह्मणों को भोजन कराना, जरूरतमंदों की मदद करना और धर्मार्थ कार्यों में भाग लेना व्यक्ति के जीवन में शुभ परिणाम लाता है और कष्ट दूर करता है. धार्मिक क्रियाओं में यह दिन सत्कर्म और परोपकार को बढ़ावा देता है.

पूजा विधि के अनुसार, सुबह जल्दी उठकर स्नान करना और स्वच्छ वस्त्र धारण करना अत्यंत शुभ है. पूजा स्थल को साफ करके गंगाजल का छिड़काव करें. सबसे पहले भगवान विष्णु की पूजा करें और उन्हें फूल, चंदन, फल, और पंचामृत में तुलसी अर्पित करें. इसके बाद दीपक और धूप जलाकर आरती करें. नारद जी की पूजा में बांसुरी अर्पित करना विशेष फलदायक माना गया है.

मान्यता है कि इस दिन विधिपूर्वक पूजा करने से भक्तों के जीवन में सकारात्मक बदलाव, मानसिक शांति और आध्यात्मिक बल बढ़ता है.

नारद जयंती केवल पारंपरिक पूजा का पर्व नहीं है, बल्कि यह भक्ति, दान और सेवा का प्रतीक भी है. इस दिन घर और मंदिरों में श्रद्धालु बड़ी संख्या में भाग लेते हैं, नारद जी के गीत और कथाएँ सुनते हैं और जीवन में धर्म और भक्ति की महत्ता को समझते हैं. इस प्रकार, नारद जयंती हमें ज्ञान, सेवा और सकारात्मक ऊर्जा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है.

मंदिर में लौंग और तुलसी पत्र चढ़ाने का महत्व

भारतीय परंपरा और धार्मिक आस्था में पूजा-पाठ का विशेष महत्व है. मंदिर में भगवान को अर्पित की जाने वाली हर वस्तु का अपना एक अलग आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अर्थ होता है. इन्हीं में से लौंग और तुलसी का स्थान बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है. सदियों से लोग मंदिर में लौंग और तुलसी चढ़ाते आ रहे हैं, और इसके पीछे कई धार्मिक, आध्यात्मिक और स्वास्थ्य से जुड़े कारण भी बताए जाते हैं.

तुलसी को हिंदू धर्म में अत्यंत पवित्र पौधा माना जाता है. इसे माता तुलसी के रूप में पूजा जाता है और भगवान विष्णु तथा श्रीकृष्ण को तुलसी अर्पित करना बहुत शुभ माना जाता है. मान्यता है कि तुलसी चढ़ाने से भगवान प्रसन्न होते हैं और भक्त की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं. तुलसी घर और मन दोनों को पवित्र बनाती है तथा सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है. यही कारण है कि मंदिरों में तुलसी पत्र अर्पित करना एक अनिवार्य परंपरा बन चुकी है.

दूसरी ओर, लौंग का भी पूजा में विशेष महत्व है. लौंग को शुद्धता और ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है. पूजा के समय दीपक में लौंग डालकर जलाना या भगवान को लौंग अर्पित करना वातावरण को सुगंधित और सकारात्मक बनाता है.

धार्मिक मान्यताओं के अलावा, लौंग और तुलसी के कुछ वैज्ञानिक लाभ भी हैं. तुलसी में औषधीय गुण होते हैं जो हवा को शुद्ध करने और रोगों से बचाने में मदद करते हैं. वहीं लौंग में एंटीबैक्टीरियल गुण पाए जाते हैं, जो वातावरण को स्वच्छ रखने में सहायक होते हैं. इस प्रकार, इन दोनों का उपयोग न केवल धार्मिक दृष्टि से, बल्कि स्वास्थ्य की दृष्टि से भी लाभकारी है.

मुख्य शयनकक्ष दक्षिण-पश्चिम या पश्चिम में शुभ

वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर में शयनकक्ष की सही दिशा बहुत महत्वपूर्ण होती है. शयनकक्ष का स्थान घर के सदस्यों की शांति, स्वास्थ्य और समृद्धि पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है. शयनकक्ष के लिए सबसे शुभ दिशा दक्षिण-पश्चिम मानी जाती है. दक्षिण-पश्चिम में शयनकक्ष रखने से घर के मालिक को आर्थिक स्थिरता, मानसिक शांति और अच्छी नींद मिलती है. यह दिशा विशेष रूप से घर के वरिष्ठ सदस्यों के लिए लाभकारी होती है.

यदि दक्षिण-पश्चिम संभव न हो, तो पश्चिम या दक्षिण दिशा में भी शयनकक्ष रखा जा सकता है. वहीं, उत्तर-पूर्व या उत्तर दिशा में शयनकक्ष रखने से तनाव, थकान और आर्थिक परेशानी बढ़ सकती है.

सिर की दिशा भी बहुत महत्वपूर्ण है. सोते समय सिर को दक्षिण या पश्चिम की ओर रखना शुभ माना जाता है. इससे स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है. सिर को उत्तर की ओर रखना अनुचित माना गया है, क्योंकि इससे चुंबकीय क्षेत्र के कारण नींद और स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है. इसके अलावा, शयनकक्ष की सजावट, रंग और प्रकाश भी महत्वपूर्ण हैं. हल्के और सुखद रंग जैसे क्रीम, हल्का नीला या हल्का हरा मानसिक शांति बढ़ाते हैं.

मनी प्लांट : घर में सुख, समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक

आज के समय में हर व्यक्ति अपने घर को सुंदर, शांत और सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर बनाना चाहता है. इसी उद्देश्य से लोग घर में पौधे लगाना पसंद करते हैं. इनमें से सबसे लोकप्रिय पौधों में से एक है मनी प्लांट. यह पौधा न केवल देखने में आकर्षक होता है, बल्कि इसे वास्तु शास्त्र और फेंग शुई में भी बहुत महत्वपूर्ण माना गया है. मनी प्लांट को घर में लगाने से कई प्रकार के लाभ मिलते हैं, जो जीवन को बेहतर बनाने में सहायक होते हैं.

सबसे पहले, मनी प्लांट को धन और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है. वास्तु शास्त्र के अनुसार, इसे घर में लगाने से आर्थिक स्थिति मजबूत होती है और धन का आगमन बढ़ता है. कहा जाता है कि यदि मनी प्लांट तेजी से बढ़ता है, तो यह घर में बढ़ती हुई समृद्धि का संकेत देता है. इसलिए लोग इसे विशेष रूप से अपने घर या ऑफिस में लगाना पसंद करते हैं.

दूसरा बड़ा फायदा है सकारात्मक ऊर्जा का संचार. मनी प्लांट नकारात्मक ऊर्जा को कम करने और सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने में मदद करता है. जब घर में सकारात्मक ऊर्जा होती है, तो मन शांत रहता है और परिवार के सदस्यों के बीच सामंजस्य बना रहता है. यह पौधा वातावरण को संतुलित करने में भी मदद करता है, जिससे घर में एक सुखद माहौल बना रहता है.

तीसरा महत्वपूर्ण लाभ है वायु शुद्धिकरण. मनी प्लांट हवा को साफ करने की क्षमता रखता है. यह हवा में मौजूद हानिकारक तत्वों जैसे कार्बन डाइऑक्साइड, फॉर्मल्डिहाइड और अन्य प्रदूषकों को कम करने में मदद करता है. इससे घर का वातावरण अधिक स्वच्छ और स्वास्थ्य के लिए बेहतर बनता है. खासकर शहरों में जहां प्रदूषण अधिक होता है, वहां मनी प्लांट एक प्राकृतिक एयर प्यूरिफायर की तरह काम करता है.

गर्मियों में सूर्य उपासना
सुबह की ऊर्जा और स्वास्थ्य के लिए सबसे शुभ साधना

गर्मी के मौसम में सुबह-सुबह सूर्य भगवान की पूजा करना अत्यंत शुभ और लाभकारी माना जाता है. सूर्य को जीवन का मुख्य ऊर्जा स्रोत माना जाता है और उनकी उपासना से न केवल धार्मिक फल प्राप्त होते हैं, बल्कि यह शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति और सकारात्मक ऊर्जा भी प्रदान करती है. विशेषज्ञों के अनुसार, गर्मियों में सूर्योदय के समय सूर्य की किरणें सबसे ताजगी और ऊर्जा देने वाली होती हैं, इसलिए इस समय उनकी पूजा करना अधिक फलदायक होता है.

पूजा के लिए घर की उत्तर-पूर्व दिशा (ईशान कोण) सबसे उपयुक्त मानी जाती है. यदि प्रतिमा या तस्वीर उपलब्ध हो तो उसे साफ और सजाए हुए स्थान पर रखें. यदि प्रतिमा नहीं है, तो पूजा स्थल को साफ, व्यवस्थित और सूरज की किरणों वाला बनाना पर्याप्त है. पूजा के लिए आवश्यक सामग्री में लाल या पीले कपड़े, दीपक और घी/तेल, लाल फूल, हल्दी, पवित्र जल और हल्का लाल चंदन शामिल हैं. सुबह स्नान करके साफ वस्त्र पहनना अनिवार्य है, ताकि पूजा के दौरान शुद्ध ऊर्जा का प्रवाह बना रहे.

विशेष रूप से गर्मियों में सूर्य पूजा के कई लाभ होते हैं. यह शरीर में ऊर्जा और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद करती है, मानसिक तनाव कम करती है और जीवन में सफलता और समृद्धि लाती है. साथ ही, यह पूजा घर में सकारात्मक ऊर्जा और शांति बनाए रखती है. वास्तु और आयुर्वेद सूर्य भगवान की सुबह की साधना गर्मी के मौसम में शरीर और मन को संतुलित करने के लिए अत्यंत आवश्यक है.

पूजा विधि में सबसे पहले दीपक जलाएँ और सूर्य भगवान को जल, फूल और हल्दी अर्पित करें. ध्यान लगाकर उनका आशीर्वाद मांगें और सूर्य मंत्र '? सूर्याय नम' का जाप करें. इस मंत्र का जाप 11 या 21 बार करना शुभ माना जाता है. मंत्र उच्चारण करते समय हमेशा सूर्य की दिशा में मुख करके बैठें. इसे नियमित रूप से करने से शरीर में ऊर्जा का संचार होता है, मानसिक शांति बढ़ती है और जीवन में सकारात्मक परिणाम आते हैं.

राशिफल

दिनांक- 03 से 09 मई 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित
प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य मेष राशि में, मंगल मीन राशि में, बुध मेष राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र वृषभ राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा तुला वृश्चिक धनु और मकर राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- मासारम्भ में मंगल शनि दोनों ही क्रूर ग्रह मीन राशि में, एक राशि सम्बन्ध में है, जिसके प्रभाव से तेल, तिलहन, रूई, कपास, चांदी, सोना, गुड, खांड में अचानक मंदी का रूख रहेगा. गेहूं, जौ, चना, मटर, बाजरा में तेजी बनेगी. ता. 3 को भरणीयां बुध के प्रभाव से रूई, कपास, सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लाल मिर्च, हींग एवं शेयर बाजार में तेजी करेगा. ता. 8 को मृगशिरायां शुक्र के प्रभाव से गुड, खांड, शक्कर, चावल, गेहूं, जौ, चना में तेजी का रूख रहेगा. उत्तरी भारत में आंधी तूफान के साथ कहीं खण्ड वृष्टि सम्भव है.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार	03 मई को	महर्षि नारद प्रकटोत्सव,
मंगलवार	05 मई को	संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 10 .7 रात
शुक्रवार	08 मई को	संत तारणतरण गुरू पर्वी

मेष

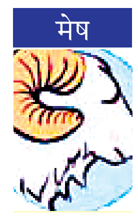

इस सप्ताह आपकी जानपहचान और परिचित का दायरा बढ़ेगा. अच्छा हो आप सामाजिक कार्यो की उपयोगिता को ध्यान में रखकर कार्य करें, आप भविष्य की योजनाओं को बना सकते हैं. पैतृक संपत्ति को बेचकर अपना हिस्सा ले सकते हैं, आप अपने निकट परिजनों के साथ दूर की यात्रा कर सकते हैं. आप वित्तीय मामलों में किसी का सहयोग लेंगे, जो उल्लेखनीय रहेगा.

वृषभ

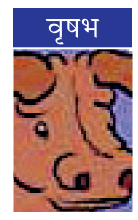

इस सप्ताह हंसी खुशी का वातावरण रहेगा, आपकी आंतरिक उर्जा चरम सीमा पर रहेगी, आप जीवन सुखमयपूर्वक व्यतीत करेंगे, आपकी नौकरी की तलाश खत्म हो सकती है,पेशेवर लोगों को वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा. कारोबारी यात्राओं की अधिकता रहेगी, जल्द ही किसी बड़ी योजना को हाल में ले जा सकते हैं.

मिथुन

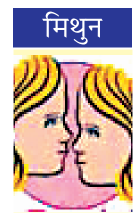

यह सप्ताह इच्छा कामना और आकांक्षाओं का रहेगा, अपने कार्यो के प्रति आप आशावादी बने रहेंगे, कई उतार चढ़ाव आयेंगे, व्यवसायिक फैसला लेने से पहले आप हर पहलू पर विचार करेंगे. घर परिवार में सुख शांति रहेगी. पारिवारिक कार्यक्रमों में धन खर्च होगा. संबंधों के विस्तार पर ध्यान जा सकता है, और लोग प्रसन्न होकर आपसे मिलेंगे.

कर्क

इस सप्ताह आप मुश्किलों का डटकर मुकाबला करेंगे, नौकरी पेशा लोग अपने पद और आमदानी से संतुष्ट रहेंगे, यदि आप रचनात्मक क्षेत्र में हैं, तो और धन की प्राप्ति होगी. जीवनसाथी के साथ आप धार्मिक यात्रा में जा सकते हैं, जधनु जायजाद से जुड़े मुकदमें में फैसला आपके पक्ष में होगा, अति आत्म विश्वास से कोई फैसला न लें, कार्यस्थल पर समस्या सुलझ सकती है.

सिंह

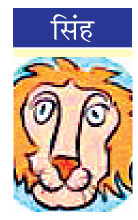

इस सप्ताह आप जीवन के नये आयाम छुयेंगे, अपनी मेहनत और लगन के बल पर आप अपनी स्थिति में सुधार करने में सफ्ल रहेंगे, कार्यक्षेत्र मेंआप क्रियाशील रहेंगे. खुले मन मस्तिष्क से समस्या का हल निकालेंगे, आप किसी नये अनुबंध में शामिल हो सकते हैं, जिससे मान सम्मान में प्रगति होगी. आप जिस पर भरोसा करते हैं, वही आपकी जड़ खोदने का प्रयास करेगा.

कन्या

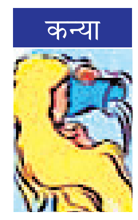

इस सप्ताह स्वास्थ्य में कुछ सुधार होने की आशा है, उधार लेनेदेन से बचने का प्रयास करें, जल्दबाजी में लिये गये निर्णय बदलने पड़ सकते हैं, आयात निर्यात का प्रस्ताव मिलेगा, कामकाजी महिलाओं कोपरेशानी होगी. साझेदारी मेंसंदेह आ जाने के कारण चल रहा कार्य बीच में ही छोड़ना पड़ सकता है, सावधानी बांछनीय, बिना मांगे सलाह देना नुकसानदायक हो सकता है.

तुला

इस सप्ताह आपको नई नौकरी मिल सकती है, व्यापार के सिलसिले में सार्थक यात्रा का योग बन रहा है, आपके करीबी रिश्तेदारों का सहयोग मिलेगा, उन पर धन व्यय होगा,बिखरे कार्य समेटने का प्रयास करेंगे, संपत्ति के कार्यो में खर्चहोगा, जानबूझकर की गई गलती की क्षमा मांगने में ही हित रहेगा. सप्ताहान्त में पारिवारिक सुखद योजना पर विचार होगा.

वृश्चिक

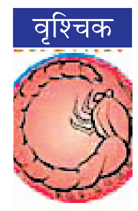

इस सप्ताह आपको उतार चढ़ाव का सामना करना पड़सकता है, कड़ीमेहनत करने पर ही सफ्लता मिलेगी, आप मानसिक अवसाद में रहेंगे, किसी विवाद के चलते आप के मन में नकारात्मक विचार आते रहेंगे,पूज्य व्यक्ति की सलाह एवं अधिनस्थों का सहयोग आपको लाभकारी रहेगा, व्यवसायिक यात्रा में सावधानी रखें, उठाईगीरों से नुकसान हो सकता है.

धनु

इस सप्ताह प्रतिस्पर्धा के दौर में किस्मत और मेहनत आपको भरपूर लाभ देगा. आपकी मनोकामना पूरी होगी, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें. दाम्पत्य जीवन में तनाव की संभावना है. भाईयों के बीच जधनु जायजाद का बटवारा हो सकता है, वाद विवादसे दूर रहें. अटके हुये कार्य पूरे होंगे. व्यापारिक यात्रा के अच्छे परिणाम मिलेंगे.

मकर

इस सप्ताह आप खुशी के समाचार सुनेंगे. परिवार की सुख सुविधाओं पर ध्यान दें. आयात निर्यात के बड़े व्यवसाय में लाभ होगा. बेरोजगारों को रोजगार मिलेंगे. सप्ताहान्त के अंत में आपके निकटस्थ विरोधी नई मुसीवतों को खड़ी कर सकते हैं, जिसका शुभ एवं शीघ्र समाधान प्राप्त होगा. अपने व्यवहार और लगन से कार्यक्षेत्र में विस्तार कर सकते है.

कुम्भ

इस सप्ताह आपकी महत्वाकांक्षा चरम सीमा पर रहेगी, अपनी बुद्धिमानी इच्छायशक्ति के लिजये आपको भाग्य पर निर्भर रहना पड़ेगा. अपना विवेक कार्य में लगायें, आप भविष्य की योजना बनायेंगे. महिला जाति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी. अचानक लाभ का योग है. यात्रायें आशाजनक रहेंगी, किन्तु उठाईगीरों से सावधानी बांछनीय. रोगी के कार्यो में खर्च होगा.

मीन

इस सप्ताह आप अत्याधिक खर्च से चिंतित रह सकते हैं, इसके बाद भी आप अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रियाशील बने रहेंगे, आपको अधिनस्थ की उपेक्षा का शिकार होना पड़ेगा, दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता रहेगी, नये लोगों से मेलजोल बढ़ेगा. भूमि भवन प्रापर्टी में खर्च होगा, नये कार्यो पर विचार विमर्श होगा. इसके लिये किसी का सहयोग या बैंक से लोन लेना पड़ सकता है.